SHODHPATRA: INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENCE AND HUMANITIES
E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 12 | December 2025

संताली बाहा गीतों में प्रकृति प्रेम का प्रतिबिंब

डॉ. नारान टुडू
कलिंगा इंस्टिट्यूट ऑफ़ सोशल साइंसेज डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी, भुबनेश्वर- ७५१०२४
Email: narantudu1990@gmail.com

सारांश

संताल भारत के प्रमुख आदिवासी समुदायों में से एक हैं। उनकी अपनी विशिष्ट संस्कृति और परंपराएँ हैं। बाहा पूजा उनकी सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह संतालों की दूसरी सबसे बड़ी प्रकृति पूजा मानी जाती है। बाहा पूजा से जुड़े अनेक गीत सीधे प्रकृति से संबंध स्थापित करते हैं। यह पूजा तीन दिनों तक मनाया जाता है। पहला दिन – 'उम नाड़का' (स्नान का दिन): इस दिन गाँव के सभी लोग केशमार्जक मिट्टी से अपने बाल धोते हैं। गाँव के नायके (पूजारी) देवी-देवताओं को स्नान कराते हैं। इसी अवसर पर देवी-देवताओं के घर और छप्पर को नया किया जाता है। संध्या समय देवी-देवताओं से संबंधित सामान देखा जाता है और उनसे जुड़े पारंपरिक गीत गाए जाते हैं। दूसरा दिन – 'सारदी माहा' (पूजा-पाठ का दिन): इस दिन गाँववासी प्रातः स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण करते हैं और नायके बाबा के घर पहुँचते हैं। गाजे-बाजे के साथ नायके बाबा को पूजा स्थल तक ले जाया जाता है। वहाँ विधिवत पूजा-पाठ संपन्न होता है और उससे संबंधित गीत गाए जाते हैं। तीसरा दिन – 'आक् राड़ा' (धनुष की डोरी खोलने का दिन): इस दिन प्रातःकाल गाँव के सभी लोग नायके बाबा के आँगन में एकत्रित होते हैं। पूजा के दिन रखा गया शगुन कलश, जिसमें पानी भरा होता है, सबसे पहले देखा जाता है। इसके बाद धनुष की डोरी खोली जाती है। इस अवसर पर विशेष गीत गाये जाते हैं, जो प्रकृति से गहराई से जुड़े होते हैं। दिन के अंत में गाँववासी निश्चित किए गए जंगल में सामूहिक शिकार के लिए जाते हैं। बाहा पूजा के तीनों दिनों में गाए जाने वाले गीत संताल समाज की प्रकृति-निष्ठ आस्था और जीवनशैली का जीवंत प्रतिबिंब प्रस्तुत करते हैं।

मुख्य शब्द : बाहा, बोंगा, प्रकृति, जाहेरथान, उम नाड़का, सारदी माहा, आक् राड़ा

परिचय:

संतालों का सबसे बड़ा पर्व सोहराय है, जिसके बाद बाहा पूजा को उनका दूसरा सबसे बड़ा प्रकृति पूजा माना जाता है। यह फाल्गुन माह में चाँद निकलने के पाँचवें दिन से लेकर पूर्णिमा तक सम्पन्न होता है। संताल का बाहा पर्व अर्थात् पूर्णिमा के पूर्व परम्परागत रूप से मनाने की प्रथा है (हेम्ब्रम, २००५, पृ. ११७) । संताल समुदाय के लोग चाँद निकलने के पहले दिन से पूर्णिमा तक के समय को पूजा-पाठ और शुभ कार्यों के लिए अत्यंत पवित्र मानते हैं। लेखक और शिक्षाविदों के अनुसार संतालों का दूसरा प्रकृति पर्व बाहा पर्व है (टुडू, २०११, पृ. १६; हांसदा, २०१०, पृ. १२०)। बाहा को केवल पर्व कहना उचित नहीं है, बल्कि इसे बाहा पूजा कहना अधिक सार्थक है, क्योंकि इसमें संताल लोग प्रकृति को नए वर्ष के फूल अर्पित करते हैं। प्रकृति द्वारा सृजित फूलों को खाने से पहले उनकी पूजा की जाती है। "बाहा" शब्द का अर्थ फूल है, और जब इसके साथ "बोंगा" शब्द जुड़ता है तो "बाहा बोंगा" अर्थात् फाल्गुन बनता है। फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष में जाहेरगाड़ में बाहा बोंगा मनाया जाता है (सोरेन, २०१७, पृ. ६)।

बाहा पूजा मूलतः प्रकृति पूजा है। संताल प्रकृति पूजक हैं प्रकृति के प्रति आकर्षण, आस्था और उसका प्रदर्शन उनके जीवन का अभिन्न अंग है। बाहा गीतों में प्रकृति के प्रति प्रेम का सजीव चित्रण मिलता है। इन गीतों और नृत्यों में धार्मिक भावनाएँ ओतप्रोत रहती हैं। माना जाता है कि बाहा गीत एवं नृत्य की रचना उस समय हुई जब मानव और

प्रकृति के बीच कोई स्पष्ट विभाजन नहीं था, बल्कि वे परस्पर सहयोग और संबंध के सूत्रों में बंधे हुए थे। प्राकृतिक घटनाओं और तत्वों के मानवीकरण की यही चेतन प्रक्रिया बाहा गीतों का मूल रूप है (टुडू, २०१३, पृ. २८-२९)। बाहा पूजा में संताल अपने देवी-देवताओं की पूजा करते हैं, जिनमें जाहेर एरा, लिटा, मोड़ेको-तुरूयको, साहार पाट, पारनिक, मांझी हाड़ाम, सीमा साड़े, माराङबुरू तथा गाँव के निर्माण में साक्षी माने गए देवता शामिल हैं। बाहा पूजा तीन दिनों तक चलता है:-

- पहला दिन – 'उम नाड़का' : स्नान का दिन।
- दूसरा दिन – 'सारदी माहा' : पूजा-पाठ का दिन।
- तीसरा दिन – 'आक् राड़ा' : धनुष की डोरी खोलने का दिन।

जयराम टुडू की पुस्तक 'सारना धोरोम बोंगा बुरू' में बाहा पूजा के संबंध में एक लोककथा वर्णित है, जो इसके ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व को उजागर करती है। कहा जाता है कि पिलचु हाड़ाम और पिलचु बुढ़ी के बच्चे हिहिड़ी पिपिड़ी से नीचे उतरकर जंगल के फल-फूल खाकर जीवन-यापन करते थे। वह क्षेत्र फल-फूल से इतना समृद्ध था कि संताल लोग उसे 'जो एर गाड़' अर्थात् 'फल बुआई क्षेत्र' कहते थे। यही स्थान बाद में संतालों के पूजा स्थल के रूप में प्रसिद्ध हुआ और 'जाहेरगाड़' कहलाया। कई वर्षों तक संताल लोग फल-फूल खाकर जीवन बिताते रहे, लेकिन उन्होंने नव-वर्ष में नये फल-फूलों को सृष्टिकर्ता माराङबुरू के नाम पर अर्पित नहीं किया। इस कारण माराङबुरू ने एक घटना घटित की। नए वर्ष में जब बच्चे फल खाने के लिए जो एर गाड़ गए और पेड़ों पर चढ़कर फल खाने लगे, तभी वहाँ एक शेर आ गया। शेर के भय से वे बच्चे पेड़ से नीचे नहीं उतर पाए। अपने बच्चों को खोजते हुए पिलचु हाड़ाम और पिलचु बुढ़ी वहाँ पहुँचे और देखा कि शेर के डर से उनके बच्चे फँसे हुए हैं। तभी उन्होंने माराङबुरू को स्मरण किया। माराङबुरू प्रकट हुए और बताया कि बिना पूजा किए ही बच्चों ने फल-फूल का रस ग्रहण किया है, इसलिए उन्होंने ही शेर का रूप धारण कर उन्हें रोका है। माराङबुरू ने कहा "मेरे ही सृजन से पृथ्वी का वातावरण बदलता है, पेड़-पौधों और लताओं में नए पत्ते निकलते हैं, फल-फूल लगते हैं। यह सब मेरा सृजन है। इसलिए पहले मेरे नाम पर अर्पण करोगे, उसके बाद ही तुम लोग फल-फूल खा सकते हो। क्योंकि तुम सृष्टि को मानने वाले पृथ्वी के श्रेष्ठ प्राणी हो।" यह कहकर माराङबुरू अदृश्य हो गए। इसके बाद पिलचु हाड़ाम और पिलचु बुढ़ी ने अपने बच्चों को समझाया कि नव-वर्ष में नए फल-फूल खाने से पहले माराङबुरू और जाहेर आयो की पूजा करनी आवश्यक है (टुडू, २०१८, पृ. १६२-१६४)।

यह कथा संतालों की प्रकृति-निष्ठ आस्था और बाहा पूजा की उत्पत्ति को स्पष्ट करती है। इसमें यह संदेश निहित है कि संताल समाज प्रकृति को सृष्टिकर्ता का प्रत्यक्ष रूप मानता है और नए फल-फूलों को ग्रहण करने से पहले उन्हें देवता को अर्पित करना अनिवार्य समझता है।

साहित्य समीक्षा:

संताली साहित्य पर अनेक विद्वानों ने कार्य किया है जिनमें डॉ. कृष्ण चन्द्र टुडू, प्रोफेसर दिगम्बर हांसदा:, डॉ. रतन हेम्ब्रोम, रमेश्वर मुर्मू और सलीम चन्द्र सोरेन के नाम प्रमुख हैं। इन लेखकों ने संताली लोकगीतों में प्रकृति और समाज के संबंध को रेखांकित किया है। किन्तु विशेष रूप से बाहा गीतों में प्रकृति प्रेम पर केंद्रित अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है। यह शोध इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

शोध पध्दति

- यह शोध गुणात्मक पद्धति (Qualitative Method) पर आधारित है। इसके अंतर्गत बाहा गीतों के पाठ-

संग्रह उनके अर्थ-संदर्भ और प्रतीकात्मक तत्वों का विश्लेषण किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सामग्री प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार की है-

- प्राथमिक स्रोत: संताली बाहा गीतों का मौखिक संकलन एवं क्षेत्रीय अध्ययन।
- द्वितीयक स्रोत: संताली साहित्य, ग्रंथ और नृवंशीय विवरण।

बाहा पर्व मनाने की विधि:

फाल्गुन महीने के पाँचवें दिन से बाहा पूजा की शुरुआत होती है। यह पर्व तीन दिनों तक मनाया जाता है। प्रत्येक दिन का क्रियाकलाप अलग-अलग होता है। यह निम्न प्रकार है-

पहला दिन उम-नाड़का माहा अर्थात् नहाने-धोने का दिन: इस दिन सुबह से ही गाँव की महिलाएँ घर-आँगन की सफाई करती हैं। वे गोबर से घर और आँगन को लिपकर स्वच्छ बनाती हैं, कपड़ों को धोती हैं तथा बाहा पूजा में प्रयोग होने वाले सभी सामानों की सफाई करती हैं। इस अवसर पर महिलाएँ और पुरुष दोनों अपने बालों को केशमार्जक मिट्टी से धोते हैं और स्नान करते हैं। पूजा स्थलों का नवीकरण किया जाता है, और देवी-देवताओं के प्रतीकों को नहलाकर तेल-सिंदूर लगाया जाता है। शाम को सभी ग्रामीण नायके बाबा के घर में एकत्र होते हैं और देवी-देवताओं से संबंधित सामान का निरीक्षण करते हैं। उनसे जुड़े गीत भी गाए जाते हैं।

इस दिन पुरुष वर्ग नायके बाबा (पुजारी) की अगुवाई में सुबह-सुबह पूजा स्थल की सफाई करता है। देवी-देवताओं के पूजा स्थान पर बने घर का नवीकरण किया जाता है और नए फूस तथा लकड़ी का उपयोग कर उसे सजाया जाता है। नायके बाबा देवी-देवताओं के प्रतीकों को नहलाकर उन पर मेथी छिड़कते हैं और तेल-सिंदूर लगाते हैं। यही देवी-देवताओं का नहाना कहलाता है। वे देवी-देवताओं से सबंधित सामान को भी धोते हैं और उन पर मेथी छिड़कते हैं।

शाम को गाँव के सभी लोग पुनः नायके बाबा के घर जाते हैं और देवी-देवताओं से संबंधित सामान तथा पूजा सामग्री देखते हैं। इसके बाद 'रूम बोंगा' (देवताओं) से शगुन-अपशकुन पूछे जाते हैं और पूजा स्थानों का निरीक्षण किया जाता है। इस दौरान ऐसे गीत गाए जाते हैं जिनमें प्रकृति-प्रेम की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। यह इस प्रकार-

साक़्ाी पे हो साक़्ाी पे

बिर दिसोम दो,

साक़्ाी पे हो साक़्ाी पे

ऩातु नावाँडी दो।

अर्थात् देवी-देवताओं को साक्षी मानकर वे जंगल भूमि का शगुन देखते हैं यह जाँचते हैं कि नई बस्ती बसाने के लिए भूमि अनुकूल है या नहीं। संताल समुदाय के लोग किसी भी स्थान पर गाँव बसाने से पहले उस क्षेत्र का गहन निरीक्षण और परीक्षण करते हैं। वे देखते हैं कि वह स्थान लोगों के रहने योग्य है या नहीं, तथा खेती-बाड़ी के लिए आवश्यक संसाधन जैसे उपजाऊ जमीन, जलस्रोत आदि उपलब्ध हैं या नहीं। इसके साथ ही लकड़ी, पत्ते, दातुन जैसी दैनिक आवश्यकताओं की उपलब्धता तथा गाय-बैल, भेड़-बकरी जैसे पालतू पशुओं के चरने के लिए पर्याप्त जगह का भी मूल्यांकन किया जाता है। जब किसी स्थान पर ये सभी सुविधाएँ मिल जाती हैं, तब गाँव बसाने की प्रक्रिया आगे बढ़ाई जाती है।

इस पूरी प्रक्रिया में वे देवी-देवताओं को साक्षी मानकर पूजा-पाठ करते हैं और शगुन देखते हैं। यदि शगुन अनुकूल होता है तो उस स्थान पर गाँव बसाया जाता है, अन्यथा वह स्थान छोड़ दिया जाता है। वे किस तरह से शगुन देखते है उसे हम निम्न गीत में देखते हैं-

चेते तेको स़ाखी केद्-आ

बिर दिसोम दो,

चेते तेको स़ाखी केद्-आ

ऩातु नावाँडी?

आदोवा चावले चुरूज् काते

स़ागुन सुप़ाड़ी दाग् दोड़ोम काते,

सारजोम दारे रे

सिम स़ांडी को तोल केदे दो।

ओना तेको स़ाखी केद् हो

ऩातु नावाँडी दो।

गीत में पूछा जाता है कि इन लोगों को इस जंगली भूमि पर निरीक्षण और परीक्षण करने के बाद गाँव बसाने का शगुन कैसे मिला? इसके उत्तर में बताया गया है कि शगुन प्राप्त करने के लिए उन्होंने साल पेड़ के नीचे आरवा चावल रखा, शगुन गगरी में पानी भरकर रखा तथा एक मुर्गे को रस्सी से साल पेड़ से बाँधा। इसी प्रक्रिया के माध्यम से उन्होंने यह जाना कि यह जंगली भूमि नए गाँव बसाने के लिए अनुकूल है। अर्थात् संताल समुदाय किसी भी नई भूमि पर गाँव स्थापित करने से पहले शगुन देखकर निर्णय लेते हैं। गीत में वर्णित विधि अनुसार वे पूजा-पाठ करते हैं आरवा चावल रखते हैं, पानी से भरी गगरी रखते हैं और मुर्गे को रस्सी से पेड़ में बाँधकर छोड़ देते हैं। इसके बाद वे लोग घर लौट जाते हैं। अगली सुबह वे पुनः उस स्थान पर आते हैं और शगुन का परिणाम देखते हैं।

- यदि मुर्गे के बड़े पंख आस-पास गिरे मिलते हैं, तो इसे अपशकुन माना जाता है और समझा जाता है कि वहाँ के ज्ञानी या महत्वपूर्ण लोग मृत्यु का सामना कर सकते हैं।
- यदि मुर्गा उस स्थान के चारों ओर टट्टी कर गया है, तो इसे शुभ संकेत माना जाता है, जिसका अर्थ है कि लोगों के जीविकोपार्जन के लिए पर्याप्त संसाधन मिलेंगे।
- यदि गगरी का पानी कम हो गया है और मुर्गा भी गायब हो गया है, तो यह संकेत देता है कि वह भूमि गाँव बसाने के योग्य नहीं है।

यदि सभी संकेत शुभ मिलते हैं, तो वे लोग उस स्थान के चारों कोनों को खोदते हैं। उनमें से तीन कोनों की मिट्टी निकालकर दो गड्ढों से ली गई मिट्टी से तीनों गड्ढों को भरने का प्रयास किया जाता है।

- यदि गड्ढे समान रूप से भर जाते हैं, तो इसे संकेत माना जाता है कि इस भूमि पर बसे लोगों की समृद्धि और पूँजी में वृद्धि होगी।

- यदि गड्ढे नहीं भरते, तो उस भूमि को अनुपयुक्त माना जाता है और उसे छोड़ दिया जाता है।

इस प्रकार संताल समुदाय का शगुन देखने और गाँव बसाने की उपयुक्तता तय करने का पारंपरिक तरीका निर्धारित होता है।

तोकोय को को सार लेदा बिर मा दिसोम दो,

तोकोय को को स़ागुन लेदा ऩातु मा डीहा।

मोड़ेको को सार लेदा बिर मा दिसोम दो,

तुरूयको को स़ागुन लेदा ऩातु मा डीहा।

गीत में पूछा गया है कि इस जंगली भूमि पर गाँव बसाने के लिए किस-किस देवी-देवता ने शगुन प्रदान किया था? इसके उत्तर में पता चलता है कि मोंड़ेको और तुरूयको देवताओं ने नया गाँव बसाने का शगुन दिया था। इस गीत के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि संताल समुदाय अपने गाँव की स्थापना से पहले शगुन देखने की परंपरा का पालन करता है और इसके लिए मोंड़ेको एवं तुरूयको देवी-देवताओं को साक्षी मानकर उनकी पूजा-अर्चना की जाती है। संताल समुदाय देवी-देवताओं में गहरी आस्था रखता है। यही कारण है कि वे गाँव बसाते समय न केवल उपयुक्त भूमि का चयन करते हैं, बल्कि देवी-देवताओं और उनके पूजा स्थलों जैसे जाहेर थान और म़ाझी थान की स्थापना भी अनिवार्य रूप से करते हैं। इससे संबंधित गीत इस प्रकार है-

जाहेर एराय सिदुब् एना हो

बिर दिसोम रे।

माराङ देवाय सिदुब् एना हो

आ़तु आड़े रे।

मोड़ें कोको सिदुब् एना हो

बिर दिसोम रे।

तुरूय कोको सिदुब् एना हो

आतु आड़े रे।

गीत में कहा गया है कि इस जंगली भूमि पर गाँव के छोर में जाहेर एरा, माराङ बुरू, मोंड़ेको और तुरूयको देवी-देवताओं की स्थापना की जाती है। हम देखते हैं कि संताल समुदाय जहाँ भी बसता है, वहाँ गाँव के एक छोर पर उनका एक प्रमुख पूजा स्थल होता है, जिसे 'जाहेरगाड़' कहा जाता है। यह स्थान सामान्यतः विशाल साल वृक्षों से घिरा होता है, और इन्हीं साल पेड़ों के नीचे देवी-देवताओं की स्थापना की जाती है, जिसे जाहेरथान कहा जाता है। जिस प्रकार गाँव बसाने के लिए उपयुक्त भूमि का निरीक्षण किया जाता है, उसी प्रकार गाँव की सीमा पर देवी-देवताओं की स्थापना के लिए जाहेर थान का चयन भी अत्यंत सावधानी से किया जाता है। समुदाय के लोग एक ऐसी सटीक व पवित्र जगह की खोज करते हैं जहाँ देवी-देवताओं की नियमित पूजा-अर्चना और सेवा सुचारु रूप से की जा सके। इससे संबंधित गीत इस प्रकार है-

ओकोय कोको चिया़ लेदा जा गोसाँय,

धिरी हुटुब् जाहेर दो।

ओकोयको को चिया़ लेदा जा गोसाँय,

सा़री सारजोम दारे बुटा़ दो।

मोड़ेंको को चिया़ लेदा जा गोसाँय,

धिरी हुटुब् जाहेर दो।

माराङ बुरूय चिया़ जा गोसाँय,

सा़री सारजोम दारे बुटा़ दो।

गीत में पूछा जाता है कि इस पत्थरों से भरे पूजा-स्थान को किसने खोजा था और इस साल वृक्ष को किसने चुना था? इसके उत्तर में बताया गया है कि मोंड़ेको ने इस पत्थरयुक्त पूजा-स्थान की खोज की थी तथा माराङ बुरू ने साल वृक्ष को पसंद किया था। नायके बाबा देवताओं को नहलाते हैं अर्थात् देवता-रूपी पत्थरों को जल से स्नान कराते हैं, उन पर मेथी छिड़कते हैं और तेल-सिंदूर लगाते हैं। इससे संबंधित गीत निम्नांकित है-

सोसो घाट रे सोसोबोद् हो

सोसो घाट रे सोबोद्,

मेराल घाट रे नाड़का हो

मेराल घाट रे नाड़का।

इस गीत के माध्यम से देवी-देवताओं के नहाने-धोने के स्थान का भी पता चलता है। गीत में उल्लेख है कि देवी-देवता सोसो घाट में अपने वस्त्र धोते हैं और मेराल घाट में स्नान तथा बाल धोने जाते हैं। बाहा पूजा के प्रथम दिवस पर स्वच्छता का विशेष महत्व होता है। जिस प्रकार देवी-देवताओं को नहलाना-धुलाना आवश्यक माना जाता है, उसी प्रकार नायके बाबा का स्नान कर पवित्र रहना भी अत्यंत जरूरी होता है। इस दिन गाँव के सभी स्त्री-पुरुष स्नान करते हैं, वस्त्र धोते हैं और अपने घर-आँगन की साफ-सफाई करते हैं। नायके बाबा के नहाने-धोने से संबंधित गीत नीचे प्रस्तुत है-

तेहेञ दो नायके दो उम कानाय हो

सुड़ा ना़ई दो साडे काना हो।

तेहेञ दो बुयु होंय नाड़काक् काना हो

माहा ना़ई दो रूयुले रूयुले हो।

अर्थात् आज नायके बाबा स्नान कर रहे हैं, इसलिए सुड़ा ना़ई अर्थात् सिंधु नदी की ध्वनि सुनाई दे रही है; और आज बुयु (पुजारी की पत्नी) भी स्नान कर रही हैं, इसीलिए माहा ना़ई अर्थात् महा नदी का जल छलकता प्रतीत होता है। यहाँ पुजारी और उसकी पत्नी के सिंधु नदी तथा महा नदी में नहाने-धोने का उल्लेख मिलता है। इससे यह संकेत भी

मिलता है कि संताल समुदाय सिंधु नदी और महा नदी के तटों या उनके आसपास के क्षेत्रों में निवास करता था या अब भी करता है। नायके बाबा स्नान कर शुद्ध होकर जब जाहेरथान की सफाई करते हैं, उस दौरान निम्न प्रकार के गीत गाए जाते हैं-

तोकोय गे दोय गेजाय गुरिजाय,

तोकोय गे दोय लाड़ लामागा?

नायके गे दोय गेजाय गुरिजाय,

बुयु गे दोय लाड़ लामागा।

गीत में पूछा गया है कि जाहेर थान (पूजा स्थल) की साफ-सफाई कौन करेगा? इसके उत्तर में कहा गया है कि नायके बाबा और नायके एरा ही पूजा स्थल की सफाई करेंगे। इस गीत से स्पष्ट होता है कि संताल समुदाय में जाहेर थान की स्वच्छता जिसमें पानी और गोबर से लेप करना, आसपास की धूल-सफाई करना तथा पूजा-स्थल को शुद्ध बनाना शामिल है मुख्य रूप से नायके बाबा और नायके एरा द्वारा की जाती है। इसके साथ ही उनका सहायक कुड़ाम नायके या कोई अविवाहित युवा भी सहयोग के लिए उपस्थित रहता है। नहाने-धोने के दिन सभी लोग अपने बाल को केशमार्जक मिट्टी से साफ करते हैं। इसी संदर्भ में निम्नलिखित गीत गाया जाता है-

उम आलाङ हो आ़जिञ, नाड़का आलाङ हो आ़जिञ,

आ़गु यालाङ हो आ़जिञ ओते गोर हासा।

ओका रे दो हो आ़जिञ उम आलाङ हो आ़जिञ,

ओका रे दो हो आ़जिञ नाड़का होसोर आलाङ।

सोसोमा घाटी रे आ़जिञ उम आलाङ हो आ़जिञ,

मेराल घाटी रे आ़जिञ नाड़का होसोर आलाङ।

गीत में वर्णित है कि एक स्त्री अपने पति की बड़ी बहन से स्नान के लिए अनुमति माँग रही है। वह कहती है “हे दीदी! चलो, हम केश-मार्जक मिट्टी लाएँगे और स्नान करेंगे, अपने बालों को साफ करेंगे।” फिर वह पूछती है “हम कहाँ स्नान करेंगे? कहाँ अपने बालों की सफाई करेंगे?” जवाब मिलता है “सोसो घाट में हम स्नान करेंगे और मेराल घाट में बालों की सफाई करेंगे।” संताल समाज के लोग पूजा-पाठ के पहले दिन अपने बालों को केश-मार्जक मिट्टी से साफ करते हैं। यह मिट्टी मनुष्य-निर्मित शैम्पू की तुलना में कई गुना अधिक प्रभावकारी और प्राकृतिक मानी जाती है। संताल समाज के लोग प्रकृति से गहराई से जुड़े हुए हैं, इसलिए वे पवित्र स्नान में मिट्टी का उपयोग करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि संताल समुदाय प्रकृति-प्रेमी तथा प्रकृति-केन्द्रित जीवन-दर्शन वाला समाज है।

जब संताल समुदाय के लोग देवताओं का आह्वान करते हैं, तो देवी-देवताओं की आत्मा उनके ऊपर अवतरित (सवार) मानी जाती है। जिन व्यक्तियों को देवताओं के नाम पर झूमाने के लिए बैठाया जाता है, वे गीत सुनते-सुनते स्वयं झूम उठते हैं। इन्हीं लोगों से शगुन-अपशकुन तथा सही-गलत का संकेत प्राप्त किया जाता है। इसके बाद पुजारी द्वारा उन्हें शांत कराया जाता है। इससे संबंधित गीत इस प्रकार है-

हेसाक् मा चोट रे जा गोसाँय तुदे दोय रागे कान

बाड़े मा लाड़े रे जा गोंसाँय गुतरूद् दोय साहेदा।

चिलीजा मेनाय जा गोसाँय तुदे दोय रागे कान ?

चिलीजा मेनाय जा गोसाँय गुतरूद् दोय साहेदा ?

देस चोङ ना़चुरेन जा गोसाँय तुदे दोय रागे कान,

दिसोम चोङ बिहुरेन जा गोसाँय गुतरूद् दोय साहेदा।

तोकोय चोङ दान्देयाय जा गोसाँय तुदे दोय रागे कान ?

तोकोय चोङ नान्देयाय जा गोसाँय गुतरूत दोय साहेदा ?

माराङ देवाय दान्देयाय जा गोसाँय तुदे दोय रागे कान।

जाहेर नेराय नान्देयाय जा गोसाँय गुतरूद् दोय साहेदा।...

अर्थात्, इस गीत में कहा गया है कि हे भगवान! पीपल के पेड़ की चोटी पर 'तुद्' पक्षी की पुकार सुनाई दे रही है और बरगद के पेड़ पर 'गुतरूद्' पक्षी के साँस लेने की गूँजती हुई आवाज आ रही है। फिर पूछा जाता है इन पक्षियों की यह पुकार और साँसों की आवाज किस कारण सुनाई दे रही है? इसका उत्तर मिलता है कि पृथ्वी के घूमने के कारण 'तुद्' पक्षी पुकार रही है और 'गुतरूद्' पक्षी तेज़ी से साँस ले रही है। गीत में आगे पूछा गया है किसके कहने पर 'तुद्' पक्षी पुकार रही है और 'गुतरूद्' पक्षी की साँसों की आवाज सुनाई देती है? उत्तर दिया गया है कि माराङ बुरू और जाहेर आयो द्वारा जानकारी दिए जाने पर ही 'तुद्' पक्षी पुकार रही है और 'गुतरूद्' पक्षी जोर-जोर से साँस ले रही है। संतालों के इस बाहा गीत में अत्यंत महत्वपूर्ण वैज्ञानिक संकेत छिपा हुआ है। गीत के माध्यम से यह विचार व्यक्त किया गया है कि पृथ्वी घूमती है, और इसी के कारण प्रकृति में विभिन्न प्रकार की परिवर्तन दिखाई देते हैं।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि इन गीतों की रचना बहुत प्राचीन है उस समय वैज्ञानिकों या ज्योतिषियों को पृथ्वी के घूमने का ज्ञान भी उपलब्ध नहीं था। भारत के प्रथम ज्योतिषी आर्यभट ने सबसे पहले स्पष्ट रूप से बताया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है। हालाँकि, उन्होंने यह नहीं कहा था कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा भी करती है। बाद में कोपर्निकस वह पहले पश्चिमी वैज्ञानिक थे जिन्होंने सिद्ध किया कि पृथ्वी एक वर्ष में सूर्य की एक पूर्ण परिक्रमा करती है (मूले, २००१, पृ. २२-२३)। परन्तु संताल समुदाय के पूर्वजों ने अपनी सभ्यता के प्रारंभिक चरणों में ही इस प्राकृतिक सत्य को समझ लिया था। इसका प्रमाण उनके बाहा गीतों में मिलता है, जो पीढ़ियों से मौखिक परंपरा द्वारा संरक्षित और जीवित है।

रूम देवता (जिन पर देवात्मा अवतरित होती है) झूमते हुए जाहेर थान का निरीक्षण करने जाते हैं। वे पूजा स्थल के चारों ओर घूम-घूमकर देखते हैं कि कहीं किसी प्रकार की अनुचित गतिविधि तो नहीं हुई है। संपूर्ण निरीक्षण के बाद वे पुनः नायके बाबा के घर लौट आते हैं। इस समय जो गीत गाए जाते हैं, वे नीचे दिए गए हैं-

जाहेरा गे जा गोसाँय, धिरीघुटू जाहेरा,

जाहेरा गे जा गोसाँय, सा़री सारजोम जाहेरा,

ओकोय मे दोय जाहेरा जा गोसाँय धिरीघुटू जाहेरा?

ओकोय मे दोय जाहेरा जा गोसाँय सा़री सारजोम जाहेरा?

माराङ बुरूय जाहेरा जा गोसाँय घिरी घुटू जाहेरा,

जाहेर एराय जाहेरा जा गोसाँय स़ारी सारजोम जाहेरा।

मोड़ेको को जाहेरा जा गोसाँय धिरीघुटू जाहेरा,

तुरूयको को जाहेरा जा गोसाँय स़ारी सारजोम जाहेरा।

गीत के माध्यम से कहा गया है कि यह जाहेरगाड़ चट्टनों तथा साल वृक्षों से भरा सुसज्जित है। हे भगवान ! चट्टनों से भरे जाहेरगाड़ को किसने बनाया? किसने सजाया साल वृक्षों से? उत्तर में कहा गया है कि माराङबुरू और मोड़ेंको ने इन चट्टानों से भरे जाहेरगाड़ को बनाया है तथा जाहेर एरा और तुरूयको ने इसे साल वृक्षों से सजाया है। संताल लोग प्रकृति पूजक है इसका प्रमाण इसी गीत में मिलता है। प्रकृति पूजक होने के कारण ही उनके जाहेरगाड़ पत्थरों तथा साल वृक्षों से भरे होते हैं। वे इन पत्थरों तथा साल वृक्षों को ही भगवान का प्रतीक मानकर पूजा करते हैं।

रूम देवताओं द्वारा जाहेर निरीक्षण कर पुजारी के घर लौटने के बाद नायके बाबा रूम देवताओं का पैर धोते हैं और रूम देवता भी उनके पैर धोते हैं। उससे संबंधित गीत इस प्रकार है-

धिरी हुटुब् दाक् जा गोसाँय

बाना स़ाड़िया लेकेज् हो

चेते तेलाङ लुया?

हो चेते तेलाङ सेटेजा ?

हो धिरी हुटुब् दाक् जा गोसाँय

बाना स़ाड़िया़ लेकेज्।

तिरियो तेलाङ लुया,

हो तोड़े तेलाङ सेटेजा।

जारगे दाक् गे किकिड़ बिञ´

हो चापे सुनुम सुवाँड़ी।

अर्थात्, चट्टनों से घिरे हुए कुएँ के पानी को हम कैसे उठाएंगे? इसके जवाब में कहा गया है कि बाँसुरी और तोड़े रस्सी से उठाएंगे। फिर कहा गया है कि पानी में तो पानी के कीड़ें है और तेल में झिंगुर गिरे हुए हैं। बाहा बोंगा माहा अर्थात् पूजा के दिन: बाहा पूजा के दिन गाँव के सभी स्त्री-पुरुष, बच्चे तथा युवा प्रातःकाल स्नान कर स्वयं को शुद्ध करते हुए नायके (पुजारी) के आँगन में एकत्रित होते हैं। नायके और नायके एरा पूजा-अर्चना के लिए आवश्यक सभी सामग्रियों की व्यवस्थित तैयारी करते हैं। तैयारी पूर्ण होने पर देवी-देवताओं से संबंधित उपयुक्त सामान निर्धारित व्यक्तियों को सौंपा जाता है, जिन पर तत्पश्चात देव-आत्मा का आवेश होता है। देव-आवेशित ये व्यक्ति नायके बाबा के साथ झूमते हुए अत्यंत श्रद्धाभाव से जाहेरथान की ओर प्रस्थान करते हैं। जाहेरथान पहुँचने के बाद नायके बाबा गोबर से लिपाई कर पूजा स्थल को पवित्र बनाते हैं। इसी प्रक्रिया के दौरान गीत गाए जाते हैं-

सेरमा दाक् गे मुतुले मुतुले,

सीता़ नाला हाड़ाय हाड़य

चेते तेलाङ गुगुरिजा,

चेते तेलाङ लाड़ लामागा ?

सेरमा दाक् गे मुतुले मुतुले,

सीता नाला हाड़ाय हाड़ाय

तोवा तेलाङ गुगुरिजा,

दाहे तेलाङ लाड़ लामागा।

अर्थात्, वर्षा के पानी से सीता नाला बहने लगा है। क्या से हम गोबर देंगे क्या से हम साफ-सफाई करेंगे ? जवाब में कहा गया है कि हम दूध और दही से गोबर देंगे, साफ-सफाई करेंगे। यानी पवित्र स्थान को गोबर देना, साफ-सफाई करना दूध और दही जैसे पवित्र समझा जाता है। साफ-सफाई के बाद पूजा स्थान पर खोंड बनाया जाता है और उस खोंड में देवी-देवताओं को महुआ तथा साल फूल अर्पण करते हैं। इस दौरान गीत गाये जाते हैं-

जा गोसाँय चेते बाहा को चुरूज् हा़टिञ

चेते गेले को साड़ा हा़टिञ ?

जा गोसाँय सारजोम बाहा को चुरूज् हा़टिञ

मातकोम गेले को साड़ा हा़टिञ।

अर्थात्, हे भगवान ! किन-किन फूलों और कलियों को खोंड में देवी-देवताओं को अर्पण किया जाता है ? उत्तर में कहा जाता है कि साल फूल और महुआ की कली को खोंड में देवी-देवताओं को अर्पित किया जाता है। जाहेर थान में पूजा-पाठ सम्पन्न होने के बाद पुरुष-महिलाएँ सभी नायके बाबा से फूल माँगते है और अपने उस फूल से खुद को सजाते हैं। पुरुष लोग कानों में फूल सजाते हैं और महिलाएँ अपने जुड़ा में खोंस देती हैं। इस प्रकार सजकर वे बाहा नृत्य-गीत करते हैं। फूल माँगने से संबंधीत गीत इस प्रकार गाये जाते हैं-

कोयेयालाङ ना़जिञ कोयेयालाङ

कोयेयालाङ हो ना़जिञ

जाहेर आयोवाक् सारजोम बाहा दो।

गोछायालाङ हो ना़जिञ गोछायालाङ

गोछायालाङ हो ना़जिञ मातकोम गेले।

बाहायालाङ हो ना़जिञ बाहायालाङ

बाहायालाङ हो ना़जिञ सारजोम बाहा।

रेबेदालाङ हो ना़जिञ रेबेदालाङ हो

रेबेदालाङ हो ऩाजिञ मोडें कोवाक् सुड़ा सागेन।

जोहारालाङ हो ऩाजिञ नेहोरालाङ

नायके दुड़ुब् आकान बोंगा रूप ते।

गीत में छोटी बहन बड़ी बहन से कहती है कि हे दीदी ! हम नायके बाबा से जाहेर आयो के साल फूल माँगेंगे। महुआ के फूल को हम पोटली में रखेंगे, साल के फूल को जुड़ा में खोंस लेंगे। हम मोडेंको के सुड़ा सागेन को भी जुड़ा में खोंस लेंगे। हम जाहेर थान के देवी-देवताओं के सामने नाचेंगे। धार्मिक शक्ति के गीत गाएंगे। हम प्रणाम करेंगे, बिनती करेंगे जहाँ नायके बाबा भगवान के रूप में बैठा है।

आँक् राड़ा माहा अर्थात् धनुष खोलने के दिन: आक् राड़ा अर्थात् धनुष की डोरी खोलना, बाहा पूजा का तीसरा और अंतिम दिन होता है। इस दिन, बाहा पूजा के प्रथम दिन चढ़ाए गए धनुष की डोरी को खोल दिया जाता है। पूजा में प्रयुक्त देवी-देवताओं के सामान को नायके बाबा संभालते हैं और सुरक्षित रखते हैं। साथ ही, बाहा पूजा में उपयोग किए गए शगुन कलश के पानी में आने वाले वर्ष का पूर्वाभास किया जाता है। इसके माध्यम से यह देखा जाता है कि वर्षा कैसी होगी अंधी-तुफान आएगा या नहीं, वर्षा सामान्य, अत्यधिक होगी या सूखा पड़ेगा। इस प्रकार, आने वाले वर्ष की प्राकृतिक और कृषि संबंधी परिस्थितियों का संकेत इस शगुन कलश के पानी के माध्यम से समझा जाता है। नायके बाबा के आंगन में गाँव के लोग धनुष की डोरी खोलने सबंधी गीत गाते हैं यह इस प्रकार-

जा गोसाँय माद् रेयाक् आक्-सार हो

लाड़ रेयाङ पाँड़छा

हो सिंदूर लुगड़ी बेधाव

हो सामानोम घान्टी

हो ओकोय गेदोय राड़ाय हो

ओकोय गेदोय भारूँड़ पुराव ?

जा गोसाँय माद रेयाङ आक्-सार हो

लाड़ रेयाङ पाँड़छा।

हो सिंदूर लुगड़ी बेधाव हो

सामानोम घान्टी

हो बोयो गेदोय राड़ाय हो

बोयो गेदोय भारूँड़ पुराव।

गीत में पूछा गया है कि बाँस के तीर-धनुष तथा लाड़ लता के रेशे से बने धनुष की डोरी को कौन खोलेगा? उत्तर में कहा गया है कि बाँस के तीर-धनुष तथा डोरी को बोयो (पूजारी) ही खोलेगा। डोरी खोलने का कार्यक्रम खत्म होने बाद पुरुष वर्ग के लोग शिकार करने जाते हैं। उस दिन वे लोग शिकार से संबंधित गीत गाते हैं। यह इस प्रकार है-

तिरियो गे तिरियो,

जा गोसाँय बिञ जाङ ओनोल तिरियो,

हो जा गोसाँय,

साकेवा गे साकेवा,

जा गोसाँय जाडाय ओनोल साकेवा।

तोकोय मेदोय ओरोङ-आ ?

जा गोसाँय बिञ जाङ ओनोल तिरियो,

हो जा गोसाँय,

तोकोय मेदोय साँहेदा ?

जा गोसाँय जाडाय ओनोल साकेवा।

माराङ देवाय ओरोङ-आ,

जा गोसाँय बिञ जाङ ओनोल तिरियो,

हो जा गोसाँय,

माराङ देवाय साँहेदा,

जा गोसाँय जाडाय ओनोल साकेवा।...

गीत में पूछा गया है कि साँप की हड्डी छाप बाँसुरी और पापीता छाप साकवा (भैंस या पहाड़ी बैल के सिंह से बनाये गया वाद्ययंत्र) कौन बजायेगा? कौन फूँकेगा? इसके जवाब में कहा गया है कि माराङ देवा लिटा़ साँप की हड्डी छाप बाँसुरी और पापीता छाप साकवा को बजायेंगे। इस गीत में आगे लिटा ठाकरा़, ग्राम देवता, गाँव के मा़झी और देश के मा़झी इस साँप की हड्डी छाप बाँसुरी और पापीता छाप साकवा को बजाने और फूँकने की बाते कही जाती है। बाहा पूजा के तीसरे दिन पानी से खेलने की भी संस्कृति है। लोग एक दूसरे पर पानी डालते हैं। यह खेल खासकर उन लोगों के बीच खेला जाता है जो एक दूसरे के साथ हँसी मजाक करते हैं। जैसे- भाभी-देवर, जीजा-साली, दादी-नाती आदि। इससे संबंधित गीत इस प्रकार है-

जा गोसाँय सा़ड़ीम चेतान

ज़ालिम लातार नायके ओड़ाक् दो

ले लोसोद् एन माना

सोड़ो बोलोएन।

जा गोसाँय सा़ड़ीम चेतान

ज़ालिम लातार हाड़ाम मा़झी ओड़ाक् दो

ले लोसोद् एन माना

सोड़ो बोलोयेन।

गीत में कहा गया है कि हे भगवान ! नायके बाबा और माझी बाबा के घर के छप्पर के ऊपर तथा नीचे कीचड़ और पानी भर गया। इस दिन पानी से खेलने के कारण के घर के आंगन में पानी और किचड़ भर जाता है।

निष्कर्ष:

संतालों का बाहा पूजा केवल हँसी-खुशी और उत्सव का अवसर नहीं है, बल्कि यह उनकी सभ्यता के स्थापित होने तथा उनके सभ्य जीवन-बोध का सशक्त प्रमाण भी है। उनके लोकगीतों से यह स्पष्ट रूप से प्रमाणित होता है कि संताल समाज ने गाँव बसाने के लिए स्थानों का चयन किस प्रकार विवेकपूर्ण ढंग से किया। गाँव की स्थापना के साथ-साथ उन्होंने प्रकृति को देवी-देवताओं के रूप में प्रतिष्ठित किया और उसकी विधिवत पूजा की। संताल समाज में प्रकृति के फल-फूलों को भोजन या उपयोग में लाने से पूर्व देवी-देवताओं को अर्पित करने की परंपरा विद्यमान है, जो उनके सुसंस्कृत और सभ्य जीवन-मूल्यों को दर्शाती है। प्रकृति के साथ सहअस्तित्व में जीना और उसकी गोद में जीवन को सहज रूप से सँवारना संताल समाज की विशिष्ट पहचान है। इस प्रकार, संताल समुदाय पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने और संतुलित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

संदर्भ सूची-

1. हाँसदा, दिगम्बर. (2010). गानाङ माला. आदिवासी वेल्फेयर सोसाइटी।
2. हेम्ब्रम, रतन. (2005). संताली लोकगीतों में साहित्य और संस्कृति. माधा प्रकाशन।
3. मूले, गुणाकर. (2001). आर्यभट. ज्ञान-विज्ञान प्रकाशन।
4. सोरेन, सलीम चन्द्र. (2017). प्रकृति (प्रथम संस्करण). श्रीमती शारिका सोरेन।
5. टुडू, जयराम. (2018). सारना धोरोम बोंगा बुरू (द्वितीय संस्करण). रघुगाड़।
6. टुडू, कृष्ण चन्द्र. (2011). खेरवाल डाहार (प्रथम संस्करण). राँची विश्वविद्यालय।
7. टुडू, कृष्ण चन्द्र. (2013). सानताड़ी होड़ सांवहेंत् (द्वितीय संस्करण). चम्पावती टुडू।